भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि के सम्मान में

भगवान नित्यानन्द की सर्वव्यापकता

स्वामी वासुदेवानन्द व इयान अरनौल्ड द्वारा

इस पूरे माह हम एक महान आध्यात्मिक गुरु, भगवान नित्यानन्द का सम्मान कर रहे हैं। वे जन्मसिद्ध थे यानी वे जन्म से ही समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त चिति के साथ ऐक्य के बोध में अवस्थित थे।

अपने जीवनकाल में, भगवान नित्यानन्द ने अनगिनत लोगों के लिए यह सम्भव बनाया कि वे अपने अन्तर में, भगवान का अनुभव कर सकें। उनकी उपस्थिति में, लोगों का मन स्वतः ही प्रशान्ति व आनन्द में लीन हो जाता। कई भक्त, भौतिक रूप से बड़े बाबा के सान्निध्य में रहना चाहते थे पर वे ऐसा नहीं कर पाते। तब बड़े बाबा उन्हें आश्वासन देते, "शान्ति रखो। मैं हर एक स्थान में हूँ।"[१]

जब भगवान नित्यानन्द जैसे सिद्धगुरु अपनी भौतिक देह का त्याग करते हैं, तब वे परम चिति के साथ पूर्ण रूप से एकलय हो जाते हैं।

बाबा मुक्तानन्द अपने श्रीगुरु के बारे में कहते हैं, "वे सर्वव्यापी हैं। तुम चाहे कहीं भी हो, जब तुम उनका स्मरण करते हो तो वे तुम्हारे समक्ष खड़े होते हैं।"[२]

और इसी कारण, वर्षों से विश्वभर के साधक अपने ध्यान में, अपने स्वप्न में, प्रकृति में, बड़े बाबा के चित्रों द्वारा या किसी भी क्षण उनका स्मरण भर करके, उनके दर्शन पाते आए हैं।

बड़े बाबा ऐसे गुरु थे जो अपने अन्तर में गहरे जाने, अपनी अन्तरतम आत्मा तक जाने के महत्त्व पर बल देते थे। वे अधिकतर समय मौन रहते थे। वे बहुत कम बोलते थे। फिर भी, उनके एक शब्द, उनकी एक दृष्टि, या उनकी एक झलक में भी जिज्ञासु के ग्रहणशील मन को शान्त करने की और उसे अपने अन्तर में भगवान का अनुभव प्रदान करने की शक्ति थी। और यह बात, आज भी सच है।

अब, आपके पास तीन प्रसंगों की रिकॉर्डिंग सुनने का अवसर है। ये प्रसंग उन तीन साधकों के हैं जिन्हें भगवान नित्यानन्द के दर्शन हुए। ये प्रसंग कई वर्ष पुराने हैं, पर आज भी वे हमारे लिए बड़े बाबा की उपस्थिति का आवाहन करते हैं।

इससे पहले कि आप ये प्रसंग सुनें, एक क्षण लेकर अपना आसन व्यवस्थित कर लें।

हरेक प्रसंग को ध्यान से सुनें। यह बोध बनाए रखें कि इन प्रसंगों को सुनने से आपको भगवान नित्यानन्द के दर्शन करने के लिए आमन्त्रित किया जा रहा है।

अब आप पहला प्रसंग सुनें जिसे इंग्लैण्ड में रहने वाली एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन की एक सेवाकर्ता, पारना डेवीस ने सुनाया है।

[प्रसंग सुनने के लिए अंग्रज़ी पृष्ठ पर ऑडिओ प्लेयर पर क्लिक करें]

गंगूबाई का प्रसंग, यह दर्शाता है कि कैसे बड़े बाबा की उपस्थिति एक साधक की अन्तर-स्थिति को पूर्णरूपेण रूपान्तरित कर सकती है। बड़े बाबा के दर्शन पाकर गंगूबाई का बोध अपनी अन्तरतम सत्ता में लीन होने लगा था। दर्शन की कीमियागिरी ने उनके मन की अशान्ति को समाप्त कर दिया और उन्होंने अन्तरजात स्थिरता व प्रशान्ति का अनुभव किया। मौन में बड़े बाबा के साथ होने से उन्होंने अपने हृदय की पूर्णता खोज ली थी।

अब आप दूसरा प्रसंग सुनें जिसे मेक्सिको शहर के एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के सेवाकर्ता, गिरी बाराहोना ने सुनाया है।

[प्रसंग सुनने के लिए अंग्रज़ी पृष्ठ पर ऑडिओ प्लेयर पर क्लिक करें]

भगवान नित्यानन्द जैसे सन्त की संगति, हमारी सीमित धारणाओं को समाप्त कर हमें अन्तर-सत्य यानी अन्तर में भगवान के अनुभव की ओर ले जा सकती है। जैसा कि वेन्कट राव के प्रसंग में बख़ूबी दर्शाया गया है, श्रीगुरु के दर्शन, पूर्ण रूप से हमारे दृष्टिकोण का शुद्धिकरण कर सकते हैं। श्रीगुरु की उपस्थिति के प्रति स्वयं को खुला रखना, हमारे अन्दर ऐसे मधुरता के भाव की अभिवृद्धि कर सकता है जिसके होने की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी — हमारी अपनी दिव्यता का अनुभव।

अब तीसरा प्रसंग सुनें जो भारत के पुणे शहर की सिद्धयोग विद्यार्थी, नीलेश्वरी शर्मा ने सुनाया है।

[प्रसंग सुनने के लिए अंग्रेज़ी पृष्ठ पर ऑडिओ प्लेयर पर क्लिक करें]

इन सिद्धयोगी के लिए, बड़े बाबा के दर्शन घर वापस आने जैसा था। और कई साधकों के लिए भी ऐसा ही है। ऐसे महात्मा की संगति के साथ जुड़कर, हम अपने अन्तर-सत्य का, अपने दिव्य प्रेम का, अपनी प्रचुरता का अनुभव कर सकते हैं। बड़े बाबा के सर्वव्यापी प्रेम का स्मरण कर, हम किसी भी क्षण दर्शन कर सकते हैं।

बड़े बाबा का दर्शन करने के कई तरीक़े हैं — आध्यात्मिक अभ्यासों को करते समय जागरूकतापूर्वक बड़े बाबा की उपस्थिति का आवाहन करना, बड़े बाबा की सिखावनियों पर मनन करना और उनकी तस्वीरें देखना, गुरुमाई जी की कविता 'एक मन्दिर निराकार' में स्वयं को निमग्न करना, बाबा मुक्तानन्द द्वारा लिखी पुस्तक, 'गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द' पढ़ना और दिन में किसी भी समय हम बस कुछ क्षण श्वास पर केन्द्रण करके बड़े बाबा का स्मरण कर सकते हैं।

उनकी कृपा व उनके आशीर्वाद असीम हैं। उनका प्रेम व संरक्षण सतत हमारे साथ हैं। भगवान नित्यानन्द की सर्वव्यापी उपस्थिति के प्रति स्वयं को खुला रखने का निरन्तर प्रयास कर, हम अपने दिव्य प्रेम के बारे में और अच्छे से जान सकते हैं।

पहला प्रसंग :

भगवान नित्यानन्द के साथ एक प्रसंग

पारना डेवीस द्वारा सुनाया गया

वह १९३० का दशक था जब बड़े बाबा भारत के, महाराष्ट्र राज्य में स्थित तानसा घाटी के घने वनक्षेत्र में पहली बार आए। यह वही स्थान है जहाँ गणेशपुरी गाँव में बड़े बाबा जी का समाधि मन्दिर है। श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने से इस गाँव की सीमा भी बढ़ती गई।

जब बड़े बाबा यहाँ पहली बार आए थे, तब यहाँ घना जंगल था और आबादी भी बहुत कम थी। यहाँ एक शिव मन्दिर था जहाँ बड़े बाबा ध्यान के लिए बैठा करते थे।

गंगूबाई नामक एक महिला वहाँ सेवा करती थीं। वे मन्दिर की साफ़-सफ़ाई करती थीं, फूल और पूजा-अर्चना की अन्य सामग्री भी लाती थीं।

वर्षों बाद जब गंगूबाई काफ़ी वृद्ध हो गईं तो वे बतातीं थीं कि मन्दिर में बड़े बाबा की उपस्थिति, आरम्भ में उन्हें किस प्रकार विचलित करती थी। मन्दिर बहुत ही छोटा था और उन्हें फूल चढ़ाने के लिए इस अजनबी के आस-पास से गुज़रना पड़ता था। वे इस अजनबी व्यक्ति के वहाँ होने से खुश नहीं थीं।

गंगूबाई के मन में कई सवाल थे। यह अजनबी इस छोटी-सी बस्ती में क्या करने आया है? यह इसी मन्दिर में क्यों आया है?

पर कई दिन, बल्कि कहना चाहिए कि कई हफ़्ते बीत गए। गंगूबाई को अपने हृदय में कुछ बदलाव-सा महसूस होने लगा।

उन्होंने इस अजनबी से अब तक एक शब्द भी बात नहीं की थी उनकी इस अजनबी से अब तक कोई बातचीत नहीं हुई थी, फिर भी इस अजनबी को रोज़ ध्यान करते देख, उनके प्रति गंगूबाई की समझ में परिवर्तन आने लगा। धीरे-धीरे और स्वाभाविक रूप से गंगूबाई ने यह महसूस किया कि जब भी वे मन्दिर में प्रवेश करतीं, इस अजनबी के वहाँ होने से वे विचलित नहीं होतीं, बल्कि उन्हें शान्ति का अनुभव होता। उन्हें हृदय में एक हल्कापन-सा महसूस होता और मन शान्त हो जाता। उनका दैनिक ध्यान प्रशान्तिपूर्ण होता।

गंगूबाई इस अजनबी में दिव्यात्मा के दर्शन करने लगीं। जैसे-जैसे उनका हृदय खुलता गया और उनका ध्यान गहरा होता गया, वे उनकी महानता की गहराई को समझती गईं।

कृपा का स्वागत करने व अपने मन, हृदय और ध्यान में होने वाले परिवर्तनों के लिए, अपना आभार अभिव्यक्त करने हेतु . . . वे भगवान नित्यानन्द की सेवा करने लगीं।

गंगूबाई भोपी, नब्बे वर्ष की आयु तक जीवित रहीं। बड़े बाबा की आजीवन भक्त के रूप में उन्होंने यह जाना कि इन दिव्यात्मा की उन्होंने जितनी सेवा की, मन में उनके प्रति प्रेम उतना ही बढ़ता चला गया। उनका जीवन बड़े बाबा की इस सिखावनी का जीवन्त उदाहरण है :

"सभी तीर्थों का केन्द्र हृदय है, वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।"

दूसरा प्रसंग :

भगवान नित्यानन्द के साथ एक प्रसंग

गिरी बाराहोना द्वारा सुनाया गया

दक्षिण भारत में पले-बड़े, वेन्कट राव जब आठ वर्ष के थे तब वे और उनके मित्र, लम्बी कद-काठी वाले, एक कृष्णवर्णीय व्यक्ति को घेरकर खड़े हो जाते थे, जिनके तन पर केवल एक लंगोटी होती थी।

ये कृष्णवर्णीय व्यक्ति उन्हें खाने के लिए चॉकलेट देते। अपने हाथ आगे बढ़ाकर, उत्साह से ऊपर उठी उनकी अनगिनत हथेलियों में मिठाइयों की वर्षा कर देते थे। बार बार। और फिर एक बार। उनके पास कोई थैला नहीं होता था, कोई जेब नहीं थी . . . कोई भी ऐसा स्थान नहीं था जहाँ वे मिठाइयाँ रख सकें। फिर भी उनके पास मिठाइयाँ कभी ख़त्म नहीं होती थीं, क्योंकि वे उनके हाथों से बरसती ही रहती थीं।

"उन्होंने पहना तो कुछ भी नहीं होता था, फिर भी वे हमें अपने हाथों से मिठाइयाँ देते थे।" वेन्कट राव आज बताते हैं, "तब मैं इतना सोच नहीं पाता था, मैं तो बस मिठाइयों का स्वाद बता सकता हूँ जोकि बहुत स्वादिष्ट होती थीं।"

ये कृष्णवर्णीय व्यक्ति, भगवान नित्यानन्द थे। हाँ, यह सन् १९२४ की बात है . . .

समय के साथ, वेन्कट राव उन मिठाइयों का स्वाद भूल गए। सचमुच, कुछ दशकों बाद जब उन्होंने याद किया तो उन्हें महसूस हुआ कि वे अपने जीवन की भाग-दौड़ में वह मिठास ही भूल चुके थे। वे कॉलेज में विद्यार्थी हुए, नास्तिक हो गए और भारत की स्वतन्त्रता के बाद श्रम-मन्त्रालय में सरकारी अफ़सर हो गए।

नौकरी करते समय, काम के सिलसिले में उनका प्रायः मुम्बई जाना होता था। वे इस बात से बहुत ख़ुश थे क्योंकि इससे उन्हें अपने बड़े भाई, राज गोपाल भट्ट से मिलने का अवसर प्राप्त होता था, जिन्हें वे बहुत प्रेम करते थे . . . अपने शिक्षक, अपने गुरु की तरह जिनका वे सम्मान करते थे।

परन्तु राज गोपाल जी के भी गुरु थे — भगवान नित्यानन्द। यह सन् १९५५ की बात है।

वेन्कट राव बताते हैं, "अपने भाई से मिलने मुझे गणेशपुरी जाना पड़ता था क्योंकि सप्ताह के अन्त में वे हर बार वहीं होते — शुक्रवार, शनिवार, रविवार — और सोमवार को वे सीधे ऑफ़िस चले जाते।"

वेन्कट राव के भाई ही नहीं, उनकी अपनी पत्नी भी भगवान नित्यानन्द की भक्त थीं। वे याद करते हुए कहते हैं, "जब बच्चों की छुट्टियाँ होतीं, तब मेरी पत्नी और बच्चे, दस-पन्द्रह दिन गणेशपुरी आकर बड़े बाबा के पास रहते। बच्चे, बाबा जी के साथ खेला करते। मैं छुट्टियाँ ख़त्म होने के बाद उन्हें मुम्बई वापस ले जाने के लिए आता था।"

"तब मैं कभी भी भगवान नित्यानन्द को प्रणाम नहीं करता था, न ही मेरे मन में उनके प्रति कोई गहरा सम्मान था क्योंकि मुझे लगता था, जैसा कि मार्क्सवादी दर्शन में कहा गया है, धर्म मनुष्य के लिए अफ़ीम जैसा है। मेरा सिद्धान्त यह था कि जीवन में जो दिखता है, जीवन उससे अधिक कुछ नहीं है. . . धर्म बेकार की चीज़ है, इससे अच्छा कुछ समाज सुधार का काम करो।"

"मेरे भाई मुझे समझाने की कोशिश करते थे, हमारी बहस हो जाती थी. . . परन्तु मैं उनसे कभी सहमत नहीं होता था — हालाँकि मैं एक ब्राह्मण हूँ और मेरे पिता ने मुझे शास्त्रों का ज्ञान व प्रशिक्षण दिया था और मैं उसमें निपुण भी था।"

फिर एक शाम, सबकुछ बदल गया।

१९५६ में गणेशपुरी वैसी ही थी जैसी १९४२ में थी, जब वेन्कट राव, अपने भाई से मिलने पहली बार वहाँ गए थे। उस समय पुराने शिव मन्दिर, श्री भीमेश्वर महादेव के सामने एक बड़ा-सा तालाब था,

मिट्टी और बाँस के टट्टरों से बन्धा एक मकान था. . . जिसे भगवान ने स्वयं बनाया था और इनके अलावा वहाँ कोई मकान नहीं था।

उस शाम, वेन्कट राव, हॉल में अपने परिवार के साथ सोए। उनका परिवार तो सो गया पर वे जिज्ञासु प्रवृति के होने के कारण, मिट्टी और बाँस के टट्टरों के दरवाज़े के बीच की मोरियों से बड़े बाबा पर नज़र रख रहे थे। बड़े बाबा, बाहर बरामदे में तेज़ी से आगे-पीछे, आगे-पीछे टहल रहे थे।

वेन्कट राव बताते हैं कि इसके बाद क्या हुआ। "रात के दो बजे थे, मैंने मन्दिर के सामने के मन्दाग्नि पर्वत से दो तेज़ बल्ब जैसी रोशनियों को आते हुए देखा। मैंने ये दोनों तेज रोशनियाँ हॉल की ओर आते देखीं।"

"रात के अन्धेरे में मैंने अपनी आँखों पर बहुत ज़ोर डालकर देखा तो पाया कि सामने से कोई जानवर आ रहा है। वह एक तेन्दुआ था। उस समय गणेशपुरी के आस-पास तेन्दुए रहा करते थे और वो मवेशियों का शिकार करने आते थे।"

"यह तेन्दुआ शान्ति से बड़े बाबा के पास आया और उनके समीप बैठ गया। फिर मैंने देखा कि बड़े बाबा ने अपना हाथ बढ़ाया और कुछ मिनटों तक उसका सर सहलाते रहे। तेन्दुआ पूरे समय बैठा रहा। और फिर वापस चला गया।"

इस आश्चर्य से बाहर निकलने के बाद, वेन्कट राव ने सोने की कोशिश की. . . यह सोचकर कि उस रात आश्चर्यचकित कर देने वाली कोई और घटना अब नहीं होगी। पर वह ग़लत थे। लगभग साढ़े-तीन बजे वह उठ गए।

"मैंने देखा कि बड़े बाबा, मेरे ठीक सामने खड़े हैं। मैंने उन्हें बड़े ध्यान से देखा और मेरी दृष्टि उनकी उंगलियों की ओर गई. . .उनकी हथेलियाँ खुली थीं, उनकी उंगलियाँ सीधे जमीन की ओर इशारा कर रहीं थीं। मैं उठा क्योंकि मुझे लगा जैसे मुझे खींचकर खड़ा किया गया हो और मैंने उनकी आँखों में देखा।"

"वे रक्तवर्णीय तेज से चमक रहीं थी, बहुत शक्तिपूर्ण, गहरे लाल तेज से भरी। फिर जब मैं उनके सामने खड़ा हुआ, तो मैंने बड़े बाबा को कहते हुए सुना, "भगवान हैं।"

"मुझमें पता नहीं क्या रूपान्तरण हुआ — पता नहीं मुझे क्या हुआ। मैं सीधा गया और उनके पाँव छू लिए। वे किसीको अपने पाँव छूने नहीं देते थे पर जिस समय मैंने उनके पाँव छुए, उसी क्षण मेरे सभी

प्रश्नों का, सभी दुविधाओं का अन्त हो गया। जैसे भगवद्गीता के आखिरी श्लोक में अर्जुन, श्रीकृष्ण भगवान से कहते हैं, 'मेरी सब दुविधा दूर हुई। मैं वही करूँगा जो आप कहेंगे।' मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ।"

सब दुविधाएँ दूर हो गई थीं और उस दिन वेन्कट राव के हृदय में भगवान के प्रति प्रेम का स्रोत फूट पड़ा था।

तीसरा प्रसंग :

भगवान नित्यानन्द के साथ एक प्रसंग

नीलेश्वरी शर्मा द्वारा सुनाया गया

वे बड़े बाबा ही थे जिन्होंने वर्ष २०१० में मुझे सिद्धयोग पथ से परिचित कराया। जहाँ तक मुझे याद है, मुझे हमेशा से भारत की यात्रा पर आने का मन था। मैं जर्मनी में पली-बड़ी; पर कुछ समय से न्यूयॉर्क शहर में रह रही थी और वहीं कार्यरत थी। वहाँ मुझे ध्यान का अभ्यास करने वाले कुछ लोग मिले जिन्होंने मुझे उनकी भारत यात्रा पर अपने साथ आने के लिए आमन्त्रित किया। मैंने हमेशा ऐसी ही यात्रा की कल्पना की थी : जो भारत की संस्कृति व सभ्यता और वहाँ के लोगों को जानने का एक अवसर हो।

इसलिए मैंने ध्यान का अभ्यास करने वाले इस संघ के साथ भारत की यात्रा की। हमने कई शहर घूमें : नासिक, आलन्दी, पुणे और त्र्यम्बकेश्वर। हम कई मन्दिर और दिव्य स्थानों पर गए। मैं भारत की कुछ पवित्र परम्पराएँ भी सीखने लगी — जैसे कि, भगवान के समक्ष सम्मानपूर्वक जाना, सम्मान व्यक्त करने के लिए प्रणाम करना।

वह आखिरी नगर जहाँ हम घर आने से बस एक दिन पहले गए, वह था गणेशपुरी। मैंने भारत की इस यात्रा के हर भाग का आनन्द उठाया, पर जब मैं गणेशपुरी आई तब मुझे लगा कि छोटी-सी इस नगरी में कुछ ख़ास है। मुझे बताया गया कि एक परम तेजोमय सन्त एक समय में, यहाँ निवास किया करते थे।

मैं उन सन्त का आश्रम देखने गई। वहाँ, मैं एक स्थान पर गई जहाँ ऊपर छत छाई हुई थी। यह स्थान मुख्य हॉल में खुल रहा था. . . वहाँ मैंने वह आराम कुर्सी देखी जहाँ वे सन्त वास्तव में बैठा करते थे। मुझे इन सन्त के सम्मान में सर झुकाने की तीव्र इच्छा हुई — केवल सर झुकाने की ही नहीं बल्कि उनकी कुर्सी के समक्ष प्रणाम करने की! मैंने अपना सर उस पवित्र कुर्सी पर रखा और मुझे जो महसूस हुआ वह था, प्रेम का एक सागर।

एकाएक मेरे अन्दर, मेरे आस-पास और मुझ से प्रेम बहने लगा। ऐसा लग रहा था कि मैं शरीर हूँ ही नहीं; मैं हरेक चीज़ के साथ एक हो गयी हूँ — और सभी कुछ अनन्त, करुणामय, प्रचुर प्रेम से स्पन्दित हो रहा था! मेरी आँखें भर आईं — आनन्दाश्रु बहने लगे।

मैं प्रणाम करके उठी और अन्य सभी लोगों के साथ पूरे आश्रम की सैर की; पर प्रेम का यह एहसास मेरे साथ रहा . . . गणेशपुरी से जाने के बाद भी वह मेरे साथ रहा।

न्यूयॉर्क वापस आने के बाद, भारत के इन सन्त का नाम जानने में मुझे बहुत समय लगा। इसके बाद भी मुझे यह जानने में कुछ समय और लग गया कि ये सन्त — भगवान नित्यानन्द — एक परम्परा के सन्त हैं . . . कि यह परम्परा, प्रज्ञान का पथ है . . . कि यह प्रज्ञान सुलभ है . . . और यह कि इस पथ पर आध्यात्मिक अभ्यास करने के लिए केन्द्र हैं। मुझे इन्टरनेट द्वारा न्यूयॉर्क शहर के ध्यान केन्द्र का पता मिला। मैं बहुत खुश थी!

तो उन सर्दियों में मैं २९ स्ट्रीट स्थित सिद्धयोग ध्यान केन्द्र गई। जब मैं वहाँ पहुँची तब मुझे दरवाज़े पर कोई नाम पट्टी या निशान तो मिला नहीं। मुझे लगा शायद ध्यान केन्द्र है ही नहीं। मैं बारिश में रोती हुई वहीं खड़ी थी। फिर दरवाज़ा खुला और मैंने देखा कि अन्दर कुछ हो रहा है। मैं अन्दर गई। मैं लोगों के साथ चलती गई, अपने जूते नीचे उतारकर, मैं ऊपर बड़े ध्यान हॉल में गई।

उस हॉल में आना, घर आने जैसा था! दीवार पर भगवान नित्यानन्द की बड़ी-सी तस्वीर थी . . . मैं उस तस्वीर के पास ही बैठ गई।

दो-चार बार केन्द्र जाने पर मुझे पता चला कि मैं सेवा अर्पित कर सकती हूँ। इस बारे में जिन सज्जन से मेरी बात हुई उन्होंने मैत्रीपूर्ण भाव और स्वागत भाव से मुझसे बात की। अगले तीन साल तक मैंने इन महिला के साथ बुकस्टोर में सेवा अर्पित की। इनका नाम जूडिथ था। तीन साल पहले ही हम दोनों एक साथ भारत आए थे। मैं दोबारा गणेशपुरी आई . . . पर इस बार मैं गुरुदेव सिद्धपीठ में रुकी और मैंने 'हृदय की तीर्थयात्रा रिट्रीट' में भाग लिया।

आज जब मैं इस सब के बारे में सोचती हूँ तो मुझे उस दिव्य प्रेम का स्मरण हो आता है और मुझे अथाह कृतज्ञता भी महसूस होती है। यह बड़े बाबा जी की कृपा थी, श्रीगुरु की कृपा जिसने मुझे यह पहचानने में मदद की कि एक बार इस पथ को स्वीकार कर लेने पर, यह मेरा जीवन रूपान्तरित कर देगा।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१]स्वामी मुक्तानन्द, गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स् २०१२] पृ २१।

[२]स्वामी मुक्तानन्द, *From the Finite to the Infinite,* (South Fallsburg, NY: SYDA Foundation, 1994) पृ ३०२।